प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पन्तनगर, जिला– ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

खेती में क्रान्ति लायेंगी पन्त कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नई प्रजातियां

पन्तनगर। 24 जून 2023। विश्वविद्यालय द्वारा अब तक 322 से अधिक विभिन्न फसलों की उन्नतिशील प्रजातियों को विकसित कर खेती के लिए जारी किया गया है जिनके फलस्वरूप देश में हरित क्रान्ति आ सकी और देश खाद्यान्न उत्पादन में आत्म निर्भर हो सका। इसी क्रम में कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार की हाल ही में हुई केन्द्रीय प्रजाति विमोचन समिति की बैठक में इस विश्वविद्यालय द्वारा विकसित दलहन की पंत मटर–462, मसूर की पंत मसूर–12, उर्द की पंत उर्द–11, सरसों की पंत पीली सरसों–2, पंत राई–22 एवं चारा ज्वार की पंत चरी–12, पंत चरी–13, पंत चरी–14 एवं पंत चरी–15 किस्मों को किसानों द्वारा उगाये जाने हेतु संस्तुत किया गया। इस विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजातियों को किसानों द्वारा उगाये जाने के लिए भारत सरकार द्वारा संस्तुत किये जाने पर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. मनमोहन सिंह चौहान द्वारा खुशी व्यक्त की गयी तथा इन प्रजातियों को विकसित करने वाले वैज्ञानिकों डा. आर.के. पवार, डा. एस.के. वर्मा, डा. अन्जू अरोरा, डा. ऊशा पन्त, डा. पी.के. पाण्डे, डा. शिवजी सिंह को बधाई दी, उनके द्वारा यह भी आवाह्न किया गया कि इन प्रजातियों के उन्नत बीज एवं इनकी उत्पादन तकनीक को खेतों तक पहुंचाने के लिए विशेष प्रयास किये जाये, ताकि उत्तराखण्ड राज्य एवं देश के अन्य राज्यों के किसानों को विश्वविद्यालय के शोध कार्यो का समुचित लाभ मिल सके। साथ ही डा. चौहान द्वारा वैज्ञानिकों से अपील की गयी कि किसानों से सीधा संवाद स्थापित कर खेती में आने वाली समस्याओं के अनुरूप प्रजातियों एवं उनकी उत्पादन तकनीकों को विकसित किया जाए ताकि भविष्य की चुनौतियों से पार पाया जा सके। बताते चले कि किसी फसल की नई किस्म विकसित करने में कम से कम 10 से 12 वर्ष का समय लगता है। खेती के लिए जारी किये जाने से पूर्व इन नई विकसित प्रजातियों को देश एवं प्रदेश के विभिन्न भागों में लगातार 3 वर्षो तक उपज सम्बन्धी परीक्षण किये जाते है यदि नई विकसित प्रजातियां प्रत्येक वर्ष किसानों द्वारा उगाई जा रही प्रजातियों जो कि उपज परीक्षणों में मानक प्रजाति का काम करती है से कम से कम 10 प्रतिशत अधिक पैदावार देती है साथ ही विभिन्न रोगों एवं कीटों के लिए भी अवरोधी हो तभी इन नई प्रजातियों को जारी करने की संस्तुति की जाती है। विश्वविद्यालय के निदेशक शोध डा. ए.एस. नैन द्वारा बताया गया कि देश में हरित क्रान्ति लाने में पन्त कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित खाधान्न फसलों जैसे– गेहूं, धान, मक्का, दलहन की प्रजातियों का विशेष योगदान रहा है उनके द्वारा यह भी बताया गया कि इन नई विकसित सभी प्रजातियों के बीजों का विश्वविद्यालय द्वारा पर्याप्त मात्रा में बीज उत्पादन कर भविष्य में किसानों को उपलब्ध कराया जायेगा। ताकि देश में खाद्यान्न फसलों के साथ–साथ पशुओं के लिए चारे की उपलब्धता सुनिश्चित हो तथा किसानों की आय में भी वृद्वि हो सके। डा. नैन ने कहा कि आज कल कस्टमाइज वैरायटी का समय है। उपज के साथ–साथ उपभोक्ता की आवश्यकतानुसार ही किस्मों का विकास किया जाना चाहिए।

निदेशक संचार